

मेरी बेकर एडी के समर्पण संदेश “Choose Ye” [“तुम चुनाव करो”] का यह अनुवाद द मदर चर्च के बोर्ड ऑफ डायरेक्टरज़ की तरफ से एक उपहार है। मिसेज एडी क्रिश्चियन साँयस की खोजकर्ती तथा संस्थापिका हैं, साँयस एंड हैल्थ विद् की टू द स्क्रिपचर्स की लेखिका, तथा बास्टन, अमेरिका में द मदर चर्च, द फर्स्ट चर्च ऑफ क्राइस्ट साँयटिस्ट की प्रतिष्ठित धर्मगुरू। वर्ष 2014 में क्रिश्चियन साँयटिस्ट के विश्वव्यापी चर्च परिवार को “तुम चुनाव करो” संदेश को पढ़ने तथा मनन करने के लिए आमन्त्रित किया गया था, उनके इस कथन के साथ, “जीसस ने क्राइस्ट-उपचार की एक आध्यात्मिक नींव पर अपनी चर्च की स्थापना की तथा अपने लक्ष्य को बनाए रखा” (साँयस एंड हैल्थ विद् की टू द स्क्रिपचर्स, पृष्ठ 136)।

द फर्स्ट चर्च ऑफ क्राइस्ट, साँयटिस्ट एंड मिसलेनी, पृष्ठ 3 - 6

“Choose Ye”

MESSAGE FROM MARY BAKER EDDY ON THE OCCASION OF THE DEDICATION OF THE EXTENSION OF THE MOTHER CHURCH OF CHRIST, SCIENTIST, JUNE 10, 1906

MY BELOVED BRETHERN: — The divine might of Truth demands well-doing in order to demonstrate truth, and this not alone in accord with human desire but with spiritual power. St. John writes: “Blessed are they that do His commandments, that they may have right to the tree of life, and may enter in through the gates into the city.” The sear leaves of faith without works, scattered abroad in Zion’s waste places, appeal to reformers, “Show me thy faith by thy works.”

Christian Science is not a dweller apart in royal solitude; it is not a law of matter, nor a transcendentalism that heals only the sick. This Science is a law of divine Mind, a persuasive animus, an unerring impetus, an ever-present help. Its presence is felt, for it acts and acts wisely, always unfolding the highway of hope, faith, understanding. It is the higher criticism, the higher hope; and its effect on man is mainly this — that the good which has come into his life, examination compels him to think genuine, whoever did it. A Christian Scientist verifies his calling. *Choose ye!*

“तुम चुनाव करो”

द मदर चर्च ऑफ क्राइस्ट, साँयटिस्ट, जून 10, 1906 के विस्तार के समर्पण के अवसर पर मेरी बेकर एडी की तरफ से संदेश

मेरे प्रिय भाइयों :- सत्य का दिव्य सामर्थ्य, सत्य को प्रत्यक्षीकृत करने के लिए अच्छा - कार्य करने की माँग करता है और केवल इंसानी इच्छा के अनुसार ही नहीं अपितु आध्यात्मिक शक्ति के साथ। सेंट जॉन लिखते हैं : “धन्य हैं वे जो उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, कि उनका जीवन के वृक्ष पर अधिकार हो, और नगर के द्वारों से प्रवेश पा सकें।” बिना कार्यों के विश्वास की कुम्हलाई हुई पत्तियाँ, ज्योन की बंजर धरती पर चारों तरफ फैली हुई, सुधारकों से अनुरोध करती हैं, “मुझे अपने कार्यों के द्वारा अपना विश्वास दिखाओ।”

क्रिश्चियन साँयस दूर किसी शाही ऍकात में बसने वाली नहीं है; यह भौतिकता का एक कानून नहीं है। न ही एक अन्तर्ज्ञान जो कि केवल बीमार का उपचार करती है। यह साँयस दिव्यमन का एक कानून है, एक प्रभावी संकल्प, एक त्रुटिरहित प्रोत्साहन, एक सदा-विद्यमान सहायता। इसकी उपस्थिति महूसस की जा सकती है, क्यों कि यह कार्य करती है और बुद्धिमता से कार्य करती है, सदा आशा, विश्वास, समझ के राजपथ का रहस्योद्घाटन करते हुए। यह अधिक बड़ी समीक्षा है, अधिक बड़ी आशा, और मानव पर इसका प्रभाव प्रमुख रूप से यह है-कि अच्छाई जो कि उसके जीवन में आई है, उसका परीक्षण उसे विशुद्ध सोचने पर मज़बूर करता है, चाहे वह किसी का भी कार्य हो। एक क्रिश्चियन साँयटिस्ट अपनी पुकार को सत्यपित करता है। *तुम चुनाव करो!*

When, by losing his faith in matter and sin, one finds the spirit of Truth, then he practises the Golden Rule spontaneously; and obedience to this rule spiritualizes man, for the world's *volens volens* cannot enthrall it. Lust, dishonesty, sin, disable the student; they preclude the practice or efficient teaching of Christian Science, the truth of man's being. The Scripture reads: "He that taketh not his cross, and followeth after me, is not worthy of me." On this basis, how many are following the Way-shower? We follow Truth only as we follow truly, meekly, patiently, spiritually, blessing saint and sinner with the leaven of divine Love which woman has put into Christendom and medicine.

A genuine Christian Scientist loves Protestant and Catholic, D.D. and M.D., — loves all who love God, good; and he loves his enemies. It will be found that, instead of opposing, such an individual subserves the interests of both medical faculty and Christianity, and they thrive together, learning that Mind-power is good will towards men. Thus unfolding the true metal in character, the iron in human nature rusts away; honesty and justice characterize the seeker and finder of Christian Science.

The pride of place or power is the prince of this world that hath nothing in Christ. Our great Master said: "Except ye . . . become as little children, ye shall not enter into the kingdom of heaven," — the reign of righteousness, the glory of good, healing the sick and saving the sinner. The height of my hope must remain. Glory be to Thee, Thou God most high and nigh.

जब, कोई भौतिकता तथा पाप में अपने विश्वास को खो कर, सत्य की आत्मा को प्राप्त करता है, तब वह स्वाभाविक रूप से स्वर्ण नियम को अभ्यास में लाता है; तथा इस नियम का आज्ञापालन मानव का आध्यात्मिकीकरण करता है, क्यों कि सांसारिक इच्छाएं तथा अनिच्छाएं इसे वशीभूत नहीं कर सकती। कामुकता, बेइमानी, पाप, विद्यार्थी को अयोग्य बना देते हैं; वे मानव के अस्तित्व के सत्य, क्रिश्चियन साँयस के अभ्यास या प्रभावशाली शिक्षण में बाधा डालते हैं। ग्रंथ में लिखा है, "वह जो अपना क्रूस नहीं उठाता और मेरा अनुसरण नहीं करता, मुझे पाने के योग्य नहीं है।" इस आधार पर कितने पथ-प्रदर्शक का अनुसरण कर रहे हैं? हम सत्य का अनुसरण तभी करते हैं, जब हम उसका अनुसरण सच्चाई से, मृदुता से, धैर्य से, आध्यात्मिकता से करते हैं, सँत तथा पापी को दिव्य प्रेम के खमीर से आशीषित करते हुए जिसे स्त्री ने ईसाई जगत तथा औषधि में लगाया था।

एक निष्ठावान क्रिश्चियन साँयटिस्ट, प्रॉटेस्टंट और कैथोलिक, दाँतों के चिकित्सक तथा औषधीय चिकित्सक से प्रेम करता है,—उन सभी से प्रेम करता है, जो परमेश्वर, अच्छाई से प्रेम करते हैं; और वह अपने दुश्मनों से प्रेम करता है। फिर ऐसा होगा कि विरोध करने के बजाए, ऐसा व्यक्ति, चिकित्सा क्षमता तथा स्त्रीस्तीयता दोनों का हित ध्यान में रखता है और वे एक साथ फलते फूलते हैं, यह सीखते हुए कि मन-शक्ति इंसानों के लिए सद्भावना है। इस तरह चरित्र में सच्ची ठोस धातु का रहस्योद्घाटन करते हुए, इंसानी प्रवृत्ति में निहित लोहे को जंग लग जाता है; ईमानदारी तथा न्यायशीलता क्रिश्चियन साँयस के खोज करने वाले तथा पता लगाने वाले का चरित्र चित्रण करती हैं।

स्थान या शक्ति का घंमड इस संसार का शासक है जो क्राइस्ट में शून्य है। हमारे महान् स्वामी ने कहा था: "तुम छोटे बच्चों के समान बन जाओ . . . इसके बिना, तुम स्वर्ग के साम्राज्य में प्रवेश नहीं कर पाओगे,"—धार्मिकता के शासन में, अच्छाई की उत्कृष्टता में, बीमार को स्वस्थ करते हुए और पापी का उद्धार करते हुए। मेरी आशा की ऊँचाई को बने रहना होगा। तुम्हारी महिमा हो, हे सर्वोच्च तथा सर्वथा निकट परमेश्वर।

Whatever is not divinely natural and demonstrably true, in ethics, philosophy, or religion, is not of God but originates in the minds of mortals. It is the Adam-dream according to the Scriptural allegory, in which man is supposed to start from dust and woman to be the outcome of man's rib, — marriage synonymous with legalized lust, and the offspring of sense the murderers of their brothers!

Wholly apart from this mortal dream, this illusion and delusion of sense, Christian Science comes to reveal man as God's image, His idea, coexistent with Him — God giving all and man having all that God gives. Whence, then, came the creation of matter, sin, and death, mortal pride and power, prestige or privilege? The First Commandment of the Hebrew Decalogue, "Thou shalt have no other gods before me," and the Golden Rule are the all-in-all of Christian Science. They are the spiritual idealism and realism which, when realized, constitute a Christian Scientist, heal the sick, reform the sinner, and rob the grave of its victory. The spiritual understanding which demonstrates Christian Science, enables the devout Scientist to worship, not an unknown God, but Him whom, understanding even in part, he continues to love more and to serve better.

Beloved, I am not with you *in propria persona* at this memorable dedication and communion season, but I am with you "in spirit and in truth," lovingly thanking your generosity and fidelity, and saying virtually what the prophet said: Continue to choose whom ye will serve.

Forgetting the Golden Rule and indulging sin, men cannot serve God; they cannot demonstrate the omnipotence of divine Mind that heals the sick and the sinner. Human

जो कुछ भी नीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र या धर्म में दिव्य रूप से प्राकृतिक तथा प्रत्यक्षीकृत होने वाला सत्य नहीं है, परमेश्वर की तरफ से नहीं है अपितु नश्वरों के हृदयों से उत्पन्न होता है। यह ग्रंथीय रूपक कथा के अनुसार आदम-स्वप्न है, जिसमें पुरुष को मिट्टी से उत्पन्न होता माना गया है तथा स्त्री को पुरुष की पसली का परिणाम, — विवाह को वैद्य कामुकता का समानार्थक, तथा इन्द्र की सँतान अपने भाइयों की कातिल।

इस नश्वर स्वप्न, इन्द्र के इस भ्रम तथा भ्रान्ति से एकदम परे, क्रिश्चियन साँयस मानव को परमेश्वर के रूप, उसके साथ सहविद्यमान, उसके विचार की तरह प्रकट करने के लिए आती है — परमेश्वर सब कुछ प्रदान करते हुए तथा मानव के पास सब कुछ होते हुए जो परमेश्वर प्रदान करता है। फिर भौतिकता, पाप या मृत्यु, नश्वर घंमड या शक्ति, प्रतिष्ठा या विशेषाधिकार की रचना कहाँ से आई? हीब्रू बाइबल की दस आज्ञाओं की पहली आज्ञा, "तुम मेरे सिवाए किसी अन्य को ईश्वर नहीं मानोगे," तथा स्वर्ण नियम क्रिश्चियन साँयस के सर्वसवा हैं। वे आध्यात्मिक आदर्शवाद तथा यर्थाथवाद हैं, जिनका जब बोध हो जाता है, एक क्रिश्चियन साँयटिस्ट को संघटित करते हैं, बीमार का उपचार करते हैं, पापी का सुधार करते हैं, और कब्र को उसकी विजय से वंचित कर देते हैं। आध्यात्मिक समझ जो क्रिश्चियन साँयस को प्रत्यक्षीकृत करती है, एकनिष्ठ साँयटिस्ट को आराधना करने में सक्षम बनाती है, एक अनजान परमेश्वर की नहीं अपितु उसकी जिसे, केवल अंश में समझ कर भी वह अधिक प्रेम करता रहता है तथा बेहतर सेवा करता रहता है।

प्रियजनों, मैं इस यादगार समर्पण तथा सहभागिता के सुअवसर पर तुम्हारे साथ *व्यक्तिगत तौर पर उपस्थित* नहीं हूँ, परन्तु मैं "आत्मा में तथा सत्य में" तुम्हारे साथ हूँ, प्रेम से तुम्हारी उदारता तथा विश्वासनीयता का धन्यवाद करते हुए और असल में वही कहते हुए जो नबी ने कहा था: निरन्तर चुनाव करते रहो तुम किस की सेवा करोगे।

स्वर्ण नियम को भूल कर और पाप में लिप्त हो कर, इंसान परमेश्वर की सेवा नहीं कर सकते; वे दिव्य मन की सर्वशक्तिमानता को प्रत्यक्षीकृत नहीं कर

will may mesmerize and mislead man; divine wisdom, never. Indulging deceit is like the defendant arguing for the plaintiff in favor of a decision which the defendant knows will be turned against himself.

We cannot serve two masters. Do we love God supremely? Are we honest, just, faithful? Are we true to ourselves? “God is not mocked: for whatsoever a man soweth, that shall he also reap.” To abide in our unselfed better self is to be done forever with the sins of the flesh, the wrongs of human life, the tempter and temptation, the smile and deceit of damnation. When we have overcome sin in all its forms, men may revile us and despitefully use us, and we shall rejoice, “for great is [our] reward in heaven.”

You have dexterously and wisely provided for The Mother Church of Christ, Scientist, a magnificent temple wherein to enter and pray. Greatly impressed and encouraged thereby, deeply do I thank you for this proof of your progress, unity, and love. The modest edifice of The Mother Church of Christ, Scientist, began with the cross; its excelsior extension is the crown. The room of your Leader remains in the beginning of this edifice, evidencing the praise of babes and the word which proceedeth out of the mouth of God. Its crowning ultimate rises to a mental monument, a superstructure high above the work of men's hands, even the outcome of their hearts, giving to the material a spiritual significance — the speed, beauty, and achievements of goodness. Methinks this church is the one edifice on earth which most prefigures self-abnegation, hope, faith; love catching a glimpse of glory.

सकते जो बीमार तथा पापी का उपचार करता है। इसांनी इच्छा शक्ति मानव को सम्मोहित कर सकती है तथा भटका सकती है, दिव्य बुद्धिमत्ता कभी नहीं। धोखे में लिप्त होना एक ऐसे प्रतिवादी की तरह है जो वादी के लिए तर्क कर रहा है एक ऐसे फैसले के पक्ष में जो कि प्रतिवादी को पता है, उसी के खिलाफ जाएगा।

हम दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकते। क्या हम परमेश्वर को सर्वोच्च प्रेम करते हैं? क्या हम ईमानदार, न्यायशील, विश्वसनीय हैं? क्या हम स्वयं के साथ सच बोल रहे हैं? “परमेश्वर का मज़ाक नहीं बनाया जा सकता इसलिए कि जो कुछ भी एक इंसान बोता है, वही वह काटेगा भी”। अपने निःस्वार्थ बेहतर आत्मत्व में वास करने के लिए सदा सर्वदा के लिए देह के पापों का इसानी जीवन की गलतियों का, प्रलोभित करने वाले तथा प्रलोभन का, निंदा की मुस्कान तथा धोखे का त्याग करना होगा। जब हम पाप पर इसके सभी प्रकारों में काबू पा लेते हैं, इंसान शायद हमारा अपमान करें तथा द्वेष के साथ हमारा फायदा उठाएं तथा हम आनन्द मनाएंगें “इसलिए कि स्वर्ग में [हमारा] प्रतिफल महान् है।”

तुम ने निपुणता तथा बुद्धिमत्ता से द मदर चर्च ऑफ क्राइस्ट, साँयटिस्ट के लिए एक भव्य मंदिर दिया है जिसमें प्रवेश किया जाए और प्रार्थना की जाए। इससे बहुत अधिक प्रभावित तथा उत्साहित हो कर मैं तुम्हारा हार्दिक धन्यवाद करती हूँ, तुम्हारी प्रगति, एकता तथा प्रेम के इस प्रमाण के लिए। द मदर चर्च ऑफ क्राइस्ट, साँयटिस्ट का विनम्र भवन क्रूस के साथ आरम्भ हुआ; इसका श्रेष्ठतर विस्तार ताज है। तुम्हारी नेत्री का कमरा इस भवन के आरम्भ में रहेगा, शिशुओं से स्तुति तथा वचन, जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, की गवाही देते हुए। इसकी परम ताज़पोशी एक मानसिक स्मारक तक बढ़ती है, एक श्रेष्ठ इमारत तक जो इंसानों के हाथों के कार्यों से, वस्तुतः उनके हृदयों के परिणाम से, कहीं बड़ी है, भौतिक को एक आध्यात्मिक महत्व देते हुए—गति, सुन्दरता तथा अच्छाई की उपलब्धियाँ। मुझे लगता है यह चर्च धरती पर एक ऐसे भवन की तरह है जो सबसे अधिक स्वयं को नकारने, आशा, विश्वास की पूर्वकल्पना करता है; प्रेम महिमा की झलक पाते हुए।

© 2014 द क्रिश्चियन साँयस बोर्ड ऑफ डायरेक्टरज़

द क्रिश्चियन साँयस बोर्ड ऑफ डायरेक्टरज़ की अनुमति से प्रतिलिपित

इस लेख की 100 फोटोकॉपी तक बिना पैसों के बाँटी जा सकती हैं, जब तक कि इसमें कुछ भी बदला न जाए।

इसके अतिरिक्त और किसी तरह प्रयोग में लाने की अनुमति के लिए, कृपया सम्पर्क करें copyright@cspcs.com

बाइबल के पद्यांश पवित्र बाइबल, पुराना और नया नियम, एक नए हिन्दी अनुवाद

© 1991 इंडिया बाइबल पब्लिशरज़, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत से लिए गए हैं